International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 458-459

चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' में व्यक्त संवेदना

सुमन रानी
चौ0देवी लाल विष्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

संवेदना साहित्य जगत का चिंतन पक्ष है। मूलतः संवेदना का अर्थ है– ज्ञानेंद्रियों द्वारा अनुभव तथा ज्ञान। संवेदना शब्द मूलतः मनोविज्ञान का एक परिभाषिक शब्द है। प्रेम के बाद संवेदना ही मानव के अंतरतम की पवित्र भावना है। सहानुभूति के दो शब्द किसी के दुख कष्ट का निवारण भले ही न करें, पर उसके दिल को तो तसलली दे ही सकते हैं। यदि संवेदना न हो तो मनुष्य पाषाण हो जाए। दूसरों के सुख–दुख को कोमलता से महसूस करने वाला ह्रदय ही न रहे तो मनुष्य के पास मनुष्य कहलाने के लिए बचेगा क्या? वेदना का सामान्य अर्थ है– दुख, कष्ट या पीड़ा। सम् उपसर्ग के प्रयोग से वेदना शब्द में अर्थ वैषिष्ट्य उत्पन्न होकर संवेदना का अर्थ सहानुभूति हो जाता है। वस्तुतः संवेदना शब्द प्रयोग और संदर्भ के अनुरूप विभिन्न अर्थों का वाचक है। अंग्रेजी में संवेदना के लिए सैन्सेषन, सिम्पैथी, सैन्सिटव आदि शब्द प्रस्तुत है। शब्दार्थ दर्षन के अनुसार संवेदना का मुख्य अर्थ है–अनुभूत ज्ञान या विदित होना अर्थात् शरीर में किसी प्रकार का वेदन होना। वस्तुतः गर्मी सर्दी, दुख–सुख का अनुभव या ज्ञान होना भी संवेदना है। परंतु हिंदी साहित्य में यह प्रायः सहानुभूति के रूप में ही लिया जाता है।

साहित्य में संवेदना के अनेक पर्याय है। जैसे कथ्य, वर्ण्य विषय, भाव–पक्ष इत्यादि। अर्थ की दृष्टि से कविता में किसी भी पर्याय का प्रयोग हो सकता है। किंतु संवेदना शब्द का प्रयोग अधिक सार्थक है। संवेदना शब्द में जहां विषय एवं वर्ण्य विषय का संकेत मिलता है वही भावनाओं की तीव्रता का भी आभास होता है। यह भी कहा जाता है कि यह कथ्य का पर्याय है अर्थात् अब तक जो अर्थ कथ्य देता है, संवेदना भी उसी अर्थ को व्यक्त करती है। कथ्य के विभिन्न अर्थ, 'कहने योग्य', 'कथनीय'। [1] अतः रचना में जो कहा गया है अथवा रचनाकार कहना चाहता है, वह कथ्य है।

हावर्डकार ने कथ्य को इस प्रकार परिभाषित किया है कि कथ्य साहित्य का अनिवार्य तत्व है। उनका मानना है कि कथ्य के अभाव में साहित्य या कला का जीवित रहना उसी प्रकार असंभव है जिस प्रकार मनुष्य के भीतर के अभाव में वह सांसे नहीं ले सकता। [2]

जब हम किसी लेखक की संवेदना को समझने का प्रयास करते हैं तो निष्चय ही उसके परिवेष और उसकी कृति का ज्ञान प्राप्त करना आवष्यक हो जाता है। संवेदना को समझने का प्रयास करना आवष्यक हो जाता है। संवेदना को लेकर भिन्न–भिन्न विद्वानों ने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में अपने मत दिए हैं जो संवेदना को और अधिक स्पष्ट करते हैं।

- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, 'संवेदना को सुख–दुखात्मक अनुभूति ही मानते हैं।' संवेदना शब्द अपने वास्तविक या अवास्तविक दुख पर कष्टानुभव के अर्थ में आया है। मतलब यह है कि अपनी किसी स्थिति को लेकर दुख का अनुभव करना ही संवेदना है।
- अज्ञेय के अनुसार, 'संवेदना वह यंत्र है जिसके सहारे जीवयष्टि अपने से इतर सब कुछ के साथ संबंध जोड़ती है। संबंध एक साथ एकता का भी और भिन्नता का भी क्योंकि उसके सहारे जहां जीवयष्टि अपने से इतजर जगत को पहचानती है वहां उससे भी अपने को अलग कराती है। [3]
- डॉ. आनंद प्रकाष दीक्षित के गत में, 'संवेदना उत्तेजना के संबंध में देह रचना की सर्वप्रथम सचेतन–प्रतिक्रिया है जिसमें हमें वातावरण की ज्ञानोपलब्धि होती है। [4]
- डॉ. देवी शंकर गुप्त ने साहित्य संवेदना की विवेचना करते हुए लिखा है, 'संवेदना का अभिप्राय अभाव की स्थिति या वेदना की निवृति से न लेकर साहित्यकार की चेतनानुभूति की उस मनोदषा से लेना चाहिए जो उसे सृजन की प्रेरणा, निर्माण की शक्ति रचना विधान की क्षणता और लोक जीवन के प्रति आस्था प्रदान करती है। [5]
- डॉ. रमानंद ने अपनी पुस्तक 'संवेदना के बिम्ब' में संवेदना के विषय में कहा है, 'यही किसी रचना को साहित्य स्तर पर पहुंचाती है, जो अपने मूल में ।
- श्री लक्ष्मीकांत वर्मा के शब्दों में, 'वर्तमान संवेदनषील अनुभूतियां आज वर्ग रचना में मात्र आंतरिक प्रस्फुटन से विकसित नहीं होती उनका एक ब्राह्म स्तर भी है। यह स्तर आज के जीवन के उस सत्य से संबद्ध है जिसमें समस्त मानव की अन्तर्वेदना हमारी संवेदना से संबंध होकर व्यक्त होती है। [6] कोष ग्रंथों में संवेदना शब्द को भिन्न–भिन्न रूपों में परिभाषित किया गया है। जिनमें से कुछ कोष ग्रंथों के उद्वरण यहां प्रस्तुत हैंः–
- ज्ञान शब्द कोष के अनुसार संवेदना का शाब्दिक अर्थ है– ज्ञान, अनुभूति जताना, सूचित करना। [7]

भाषा शब्द कोष में संवेदना का अर्थ है– सुख–दुखादि की प्रतितिया अनुभूति। [8] दांपत्य संबंध पारिवारिक व्यवस्था व समाज की धुरी है। दांपत्य संबंध में पति–पत्नी के विवाहित जीवन को चित्रित किया जाता है जोकि मधुरता व कटुता का मिश्रण होता है। पति–पत्नी एक दूसरे के जीवन भर के साथी होते हैं, सुख–दुख के साथी। वास्तव में वे एक दूसरे के पूरक हैं एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा है। दांपत्य संबंध मधुरता व कठोरता का ऐसा अनूठा संगम है जिसमें विचलन करने के लिए प्रत्येक प्राणी लालयित रहता है। लेखिका ने भी आलोच्य कहानी संग्रह में संकलित ग्यारह कहानियों में से पांच कहानियों– 'नग आंखें, सौतेली, भाग्यचक्र, अभिनय और भीगा मन' में दांपत्य संबंध से संबंधित विभिन्न परिस्थितियों को उभारने की यथार्थ कोषिष की है।

पत्नी चाहे कितनी भी षिक्षित क्यों न हो, कितने ही ऊंचे पद पर आसीन क्यों न हो, पर वह यह कभी सहन नहीं कर सकती कि

उसका पति उसकी उपेक्षा कर किसी अन्य स्त्री से संबंध जोड़े। इसी समस्या को लेखिका ने अपनी 'अभिनय' कहानी में चित्रित किया है। 'अभिनय' कहानी की नायिका अनीता की निम्न पंक्तियों भी पत्नी की ऐसी मनोदषा पर प्रकाष डाल रही हैः–

'मुझे क्या पता था कि मेरे अंदर भी कोई चिंगारी है, जो साधारण औरतों की तरह मुझे भी जलाएगी। एक दिन मुझे भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ेगा, 'उन्हीं ईर्ष्यालु औरतों की तरह, जिनका वर्णन मैं अपनी कहानियों में करती थी। मुझे क्या पता था कि अपनी उन सब कहानियों की नायिका के रूप मैं ही हूं। [9]

कहा जाता है कि एक स्त्री राख की सौत को भी सहन नहीं कर सकती। यहां पर अनीता की मनोदषा इसी तथ्य को उजागर कर रही हैं जोकि छत प्रतिछत सत्य प्रतीत हो रहा है।

नारी संपूर्ण दुनिया का आधा भाग है। वह एक ऐसी आधी दुनिया है जो प्रत्येक कदम पर पुरुष द्वारा नियंत्रित और अनुषासित होती रही है। पति भी अपनी पत्नी की मानसिक व्यथा को समझने में अनेक अवसरों पर असफल रहा है। पोखी ही स्थिति का षिकार है 'सौतेली' नामक कहानी की नायिका रानी। यथाः–

'..... तुम क्या समझोगे मन–मन की व्यथा। मेरे द्वारा किए जा सकने वाले संभावित दुर्व्यवहार उन्हें समझा दिए गए है, इसलिए जब कभी सुनील या राम को अकेले देख शरारत से उन्हें पकड़ लेती हूं या पीछे से आंखें बंद करती हूं तो वे शरारत से खिलखिलाने की बजाए भय से चीख उठते हैं। तब मां जी मुझे अकारण, बिना कुछ समझें, गालियां देती उन्हें बचाने आती है तो अपमान से मैं कितनी बार मरती हूं, यह तुम क्या समझोगे और वह आंसुओं से फूट पड़ती। [10]

स्त्री भाव पत्नी से ये हमेषा अपेक्षा की जाती है कि वो अपने पति को समझे, उसके दुख के कारण को जान उसे दूर करने का प्रयत्न करे। ऐसी पत्नी को ही भारतवर्ष में एक आदर्ष व सती–सावित्री माना जाता है। पर पति आज के युग में भी अपनी पत्नी के मनोभावों को समझने की कोषिष नहीं करता बल्कि जरूरत नहीं समझता। मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई प्रयोजन के अपनी संतान का लालन–पोषण करते हैं। संतान के खुषी के लिए माता–पिता जीवन भर त्याग करते रहते हैं। संतान की खुषी में ही माता–पिता की खुषी होती है। वे अपनी संतान के चेहरे पर आई दुख की एक लकीर भी बर्दाष नहीं कर सकते। आलोच्य कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'निषांत' में अंधरंग से पीड़ित एक लाचार पिता की अपनी पुत्री की प्रति यही भाव देखने को मिलते है यथाः–

'मैं जानता हूं कि तेर हृदय में चिंगारिया है जो समय–समय पर सुलगती रहती है। पर बेटी! तुम समझती हो कि तुम यह सब अकेले सहयोगी। वहीं, इस धुएं में मेरा भी दम घुटता है। तुम्हारी चिंगारियों को बुझाने का कोई उपाय नजर नहीं आता, सोचता बहुत हूं।' [11]

भगवान हट जगह प्रत्यक्ष रूप में नहीं रह सकता, इसलिए उसने मां को बनाया। मां वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति होती है जोकि अपनी संतान पर दुख की छाया भी नहीं पड़ने देना चाहती। सौभाग्यवान होते हैं वो जिन्हें दीर्घायु तक मां के वात्सल्य भरे हाथों की छत्र–छाया नसीब होती है। मां अपने संतान के खान–पान, उठने–बैठने प्रत्येक के प्रति सचेत होती है। यथाः–

'पर बेटी। घर की चीज घर की होती है। ये सब चीजें असली घी की बनाई हुई है। इन लड्डुओं में बादाम भी डाल दिए है। कोई ढंग की चीज खाएगी नहीं तो ताकत कहां से आएगी? [12] 'निषांत' कहानी की नायिका भी अपने माता–पिता के लिए कुछ भी कर सकती है। यथा– नीला के मुंह से गहरा विष्वास निकलकर रसोई में छज्ञ गया। मन चीत्कार कर उठा..... 'मां! कुछ तो बदलो। जब से होष संभाला है, तुम्हें आंसू पीते ही पाया है। तुम्हारी प्यास इतनी अतृप्त क्यों है? तुम्हारे आंसू सुखाने को मैंने क्या नहीं किया, क्या नहीं कर रही और क्या नहीं करूंगी। [13]

कई बार बच्चे माता–पिता की डांट सुन झुंझला उठते हैं। बच्चे उनका अकारण क्रोध सहक नहीं पाते। पर माता–पिता के एक मीठे स्वर से सब कुछ भूल जाते हैं। यही स्थिति 'द्वंद्व' कहानी की नायिका की है जो अपने पिता की स्नेहसिक्त पुकार सुनकर भावुक हो जाती है यथाः–

'ओह पापा! उसने गद्गद् हो पापा की बांह से अपना सिर टिकाकर आंखें बंद कर ली। पष्चाताप के कारण उसकी आंखों में आंसू आ गए। मैंने पापा के बारे में कैसा–कैसा सोचा, मैं कितनी नीच हूं। जरा से डांट दे, तो सहन नहीं कर पाती, भुनभुन करती हूं। [14]

निश्कर्शः

लेखिका ने अपने आलोच्य कहानी संग्रह में सभी जगहों पर एक पुत्री की अपने माता–पिता के प्रति संवेदना प्रकट होती है, कहीं पर भी पुत्र द्वारा व्यक्त अपने माता–पिता के प्रति संवेदना का संकेत नहीं मिलता है। भारतवर्ष ऐसा देष है जिसमें श्रवण जैसे पुत्रों ने अपने माता–पिता की इच्छा पूरी करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। चाहे आज के युग में श्रवण जैसे पुत्रों का मिलना जटिल है, दुर्लभ नहीं। जिस आनंद की प्राप्ति बच्चे को अपने मां–बाप की छत्र–छाया में मिलती है, वो और कहीं नहीं मिल सकती। यही कारण है कि आज के स्वार्थी युग में भी बच्चों के मन में अपने मां–बाप के प्रति प्रेम की भावना विद्यमान है। श्रवण जैसे पुत्र आज भी अपने माता–पिता के बोझ को अपने कंधों पर उठाने के लिए तत्पर है।

सन्दर्भ

1. रामचंद्र वर्मा (सं.) 'संक्षिप्त हिंदी सागर', पृ. 191,
2. षिवकुमार मिश्र 'मार्क्सवादी साहित्य चिंतन, इतिहास तथा सिद्धांत' पृ. 343
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, 'हिंदी साहित्य का इतिहास' पृ. 691–92
4. अज्ञेय, हिंदी साहित्यः एक आधुनिक परिदृष्य' पृ. 17
5. डॉ. आनंद प्रकाष दीक्षित, 'हिंदी साहित्य कोष भाग', पृ. 863
6. 'नई कविता के प्रतिमान' पृ. 47–48
7. डॉ. मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, 'ज्ञान शब्द कोष', पृ. 80
8. डॉ. रमाषंकर शुक्ल रसालः 'भाषा शब्द कोष' पृ. 1496
9. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 37
10. डॉ. गीता लाल, 'प्रेमचंद नारी चित्रण' पृ. 38
11. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 9
12. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 10
13. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 10–11
14. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 48